[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

F

Sr. No. of Question Paper : 1417

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester / Type : II / DSC-3

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कबीर पूँजी साह की, तूं जिनि खोवै ख्वार ।

खरी बिगूचनि होइगी, लेखा देती बार ।।

कबीर माला काठ की, कहि समझावै तोहि ।

मन न फिरावै आपणां, कहा फिरावे मोहि ।।

P.T.O.

अथवा

हरि अपनैं आँगन कछू गावत।

तनक-तनक चरननि सौं नाचत, मनहिं मनहिं रिझावत।

बाँह उठाइ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत।

कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत।

माखन तनक आपनैं कर लै, तहक बदन मैं नावत।

(ख) अंग-अंग नग जगमगत दीपसिखा-सी देह।

दिया बढ़ाऐ हूँ रहै बड़ौ उज्यारौं गेह।। ।।

केसरि कै सरि क्यौं सकै, चंपकु कितुक अनुपु।

गात-रूप लखि जातु दुरि जातरूप कौ रूपु।

अथवा

जब याद आती है बड़ों के उन सपूतों की कथा,

उनके सखा, संगी, विदूषक और दूतों की कथा।

तब निकल पड़ते हैं हृदय से वचन ऐसे दुख भरे-

होवें न ऐसे पुत्र चाहे हो कुल-क्षय है हरे!

(ग) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर;
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर !

– उनको प्रणाम !

अथवा

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अम्बर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिये। (15)

अथवा

तुलसी की भक्ति भावना की विवेचना कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित 'बिहारी' के दोहों की विशेषताऐं लिखिए। (15)

अथवा

"'हिमालय के आँगन में' प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना व्यक्त हुई है" इस कथन की तर्कसंगत समीक्षा कीजिए।

4. 'जो बीत गयी सो बात गयी' कंविता में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) सूरदास की भक्ति भावना

(ii) मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय

(iii) 'गीत-फरोश' कविता की मूल संवेदना

(iv) 'बीती विभावरी जाग री' कविता का उद्देश्य